

स्थानीय विकास और लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की आधारभूत इकाई के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हालांकि ग्राम पंचायतों के समक्ष वित्तीय संसाधनों की कमी, प्रशासनिक हस्तक्षेप, तकनीकी संसाधनों का अभाव तथा प्रशिक्षण की सीमित व्यवस्था जैसी कई चुनौतियाँ भी मौजूद हैं, जिनके कारण पंचायतों की संभावित भूमिका पूरी तरह से सामने नहीं आ पाती। इसलिए आवश्यक है कि ग्राम पंचायतों को अधिक वित्तीय और प्रशासनिक स्वायत्तता प्रदान की जाए, पंचायत प्रतिनिधियों के लिए नियमित प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण की व्यवस्था की जाए तथा डिजिटल शासन और पारदर्शिता को बढ़ावा दिया जाए। इसके अतिरिक्त ग्रामीण विकास को अधिक प्रभावी बनाने के लिए ग्राम इनोवेशन लैब, ग्राम डेटा बैंक, ग्राम रोजगार क्लस्टर और डिजिटल पारदर्शिता बोर्ड जैसे नवाचारी मॉडल विकसित किए जा सकते हैं। ये पहले स्थानीय संसाधनों, जनभागीदारी और तकनीकी नवाचार को एक साथ जोड़कर पंचायत शासन को अधिक प्रभावी बना सकती हैं। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि यदि ग्राम पंचायतों को पर्याप्त संसाधन, अधिकार और संस्थागत समर्थन प्रदान किया जाए तो वे न केवल ग्रामीण विकास को गति दे सकती हैं, बल्कि बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत के समक्ष उपस्थित चुनौतियों के समाधान में भी महत्वपूर्ण और प्रभावी भूमिका निभा सकती हैं।

संदर्भ-

1. Government of India. (1992). The Constitution (Seventy-Third Amendment) Act, 1992. Ministry of Law and Justice. New Delhi <https://panchayat.gov.in/en/document/73rd-constitutional-amendment-act-1992/>
2. Finance Commission of India. (2021). Report of the Fifteenth Finance Commission (2021-2026). Government of India. Official report: <https://fincomindia.nic.in>
3. Ministry of Panchayati Raj. (2024). Annual Report 2024-25. Government of India. https://cdnbbsr.s3.waas.gov.in/s316026d60ff9b54410b3435b403afd226/uploads/2025/02/20250219868964551.pdf?utm_source=chatgpt.com
4. Ministry of Rural Development. (2023). Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act (MGNREGA) Annual Report <https://www.dord.gov.in/static/uploads/2024/02/f13c435389b9dc6ec6aa4b647fc11614.pdf>
5. Ministry of Panchayati Raj. (2022). Rashtriya Gram Swaraj Abhiyan: Capacity Building of Panchayats Report. <https://panchayat.gov.in>
6. NITI Aayog. (2022). Governance and Rural Development Report. https://www.niti.gov.in/sites/default/files/2023-02/Annual-Report-2022-2023-English_1.pdf
7. Artificial Intelligence (AI) Transforming Rural India <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2231706®=3&lang=2>
8. United Nations. (2015). Transforming our world: The 2030 Agenda for Sustainable Development. <https://sdgs.un.org/2030agenda>
9. World Bank. (2022). Social accountability and local governance in India. (Social Accountability And Service Delivery Effectiveness:). <https://documents1.worldbank.org/curated/en/099534209302293819/pdf/IDU0aff7666c06b8804bc00a9170ce2d26867056.pdf>
10. UNDP. (2020). Local governance innovation report. <https://www.undp.org>
11. IPCC. (2021). Climate change 2021: The physical science basis. Cambridge University Press. <https://www.ipcc.ch/report/ar6/wg1/>
12. World Inequality Lab. (2022). World inequality report 2022. Harvard University Press. <https://wir2022.wid.world>
13. Kerala State Planning Board. (2019). Local government data-based planning report. <https://spb.kerala.gov.in>
14. Mathew, G. (2000). Panchayati Raj Institutions and Human Rights in India <https://www.jstor.org/stable/4413076>
15. Bardhan, P., & Mookherjee, D. (2006). Decentralization and Local Governance in Developing Countries. MIT Press. <https://direct.mit.edu/books/edited-volume/2386/Decentralization-and-Local-Governance-in>
16. Sen, A. (1999). Development as Freedom. Oxford University Press. https://kuangaliablog.wordpress.com/wp-content/uploads/2017/07/amartya_kumar_sen_development_as_freedombookfi.pdf

वीरेन्द्र जैन के उपन्यासों में चरित्र- चित्रण

जोषी सुनिलकुमार भावेशभाई

पीएच.डी. शोधार्थी

गोविन्द गुरु विश्वविद्यालय, गोधरा (गुजरात)

डाक पता- अक्ष पार्क, सरकारी आयुर्वेदिक औषधालय के पास, आनंदनगर रोड, नखत्राणा-३७०६१५, तहसील- नखत्राणा, जिला- कच्छ (गुजरात) मो-८१४१८१८१२३

पात्र योजना में प्रमुख रूप से दो शिल्प विधियों को देखा जा सकता है,- १) वर्णनात्मक २) विश्लेषणात्मक. वर्णनात्मक शिल्प विधि में लेखक स्वतंत्र और आसानी से लिखनी चलाता है, उसमें पात्र के बाहरी स्वरूप का विस्तृत वर्णन होता है।

कभी-कभार उपन्यासकार की विचार शक्ति पात्रों को हकीकत में बदल देती है और वह पात्र संवेदना और सहानुभूति से होकर भावात्मक जुड़ाव महसूस करता है, जैसे हमारे आसपास वह सब घटित हो रहा हो। विश्लेषणात्मक शैली का उपयोग मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के लिए उपयुक्त है, क्योंकि इसमें पात्रों के ज्यादातर मन के भाव जीवन में आने वाली चुनौतियाँ और मानसिक स्थितियों का चित्रण किया जाता है।

'सबसे बड़ा सिपहिया' उपन्यास के चरित्र सत्य की धरातल से उभरे सामाजिक चरित्र हैं। हर एक चरित्र अपने आप में जिम्मेदार दिखता है। सभी पात्र अपने अस्तित्व को छोड़कर मानो सिपहिया बन चुके हो ऐसा इस उपन्यास में प्रतीत होता है। सभी वर्दीधारी में एक पत्रकार का पात्र होता है, जो सत्य की राह पर चलने वाला ईमानदार चरित्र होता है। ड्यूटी ऑफिसर (डी.ओ) यूनिफॉर्म पहने रौब नहीं जमाता, उतना तो यूनिफॉर्म पहने बिना ही दिखता है, परंतु यथार्थ की धरा पर ऐसा नहीं देखने मिलता। प्रत्येक इंसान को गुनहगार की नजरों से नहीं देखा जा सकता है।

इस उपन्यास में जैनजी ने पात्रालेखन बड़ी गहराई से किया है। इससे चरित्रों में सजीवता देखने मिलती है। वर्दीधारी के कर्तव्य, गतिविधियाँ, जिम्मेदारियाँ और निष्ठा सभी का अस्वीकार करते अपनी क्षमता का अनुचित उपयोग करते दिखाया गया है। पुलिस के आचरण के साथ-साथ सामान्य जनता के हक और कानून की धजियाँ उड़ाते तथा अभद्र भाषा का प्रयोग करके जनता को भयभीत कर निर्दयता की जानकारी दी है। उपन्यास का प्रधान पात्र पत्रकार आनंद 'सागर' पत्रिका का उपसंपादक होता है। "अपने संस्थान की प्रमुख पत्रिका 'सागर' के लिए उसने पिछले सप्ताह अपने प्रदेश में आए नए ओ.जी. पुलिस का इंटरव्यू लिया था।" (१)

एक दिन पत्रकार आनंद के घर में चोरी होती है, वह थाने में रिपोर्ट लिखवाने जाता है। पुलिस स्टेशन में अपनी पहचान 'पत्रकार' न देकर सामान्य नागरिक बताता है, तब से उसे बुरे दौर से गुजरना पड़ता है। थाने में रिपोर्ट न लिखकर, उससे घूस लेने के प्रयत्न किए जाते हैं। इस बीच कुछ घटनाएँ थाने में आनंद देखता है, तब पूरे दिन थाने में बैठकर उसे पुलिस की कथनी और करनी में अंतर दिखता है। बाद में उसे धन की लालच देकर उसकी इमानदारी खरीदने का प्रयत्न होता है, लेकिन उसमें विफलता मिलती है।

सच्चा पत्रकार जो अपने कर्तव्य पथ पर चलने वाला होता है, उस पत्रकार को मवालियों के द्वारा पिटाया जाता है। उसे चरित्रहीन भी बताया जाता है, उसे जबरन दस्तखत करने पड़ते हैं तथा आई.जी पुलिस अफसर एक मीडिया कार्यक्रम में नाटकीय रूप से उसकी गलतियों को क्षमा करके सार्वजनिक सूचना देते हैं। अंत में पत्रकार आनंद पुलिस के

षडयंत्र और धूर्तता के सामने हार जाता है। इस बीच वह अपना सब कुछ खो देता है। लेखक ने इस उपन्यास में पुलिस व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है।

'शब्द-बध' उपन्यास के प्रधान पात्र आनंदवर्धन की जीवन कथा पर उपन्यास की रचना की गई है। लेखक ने इस उपन्यास में पात्रालेखन बहुत ही सूक्ष्मता से हमारे सामने रखा है। उपन्यास में पात्रों को सत्य की धरा पर रखकर शब्दों को कसाईखाने में रख सामाजिक चित्रण प्रस्तुत किया है। सामाजिक जीवन को उपन्यासकार ने सूक्ष्मता से हमारे सामने रखकर, सभी चरित्रों की मदद से इस उपन्यास की कथावस्तु के रूप में बुना गया है। कथनी और करनी में जहाँ फर्क दिखाई देता है, ऐसे समय शब्दों का कुछ मोल न रहकर हर-क्षण शब्द का वध किया जा रहा है। तब प्रकाशन की दुनिया में लेखक और पाठकों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कुछ प्रकाशक भी शब्दों का वध करते पाए जाते हैं।

आनंदवर्धन प्रधान पात्र होने के साथ-साथ वह एक संस्थान में लेखक होता है। संस्थान में लेखन कार्य दौरान लेखक के आत्म सम्मान को ठेस पहुँचती है। तब संस्थान से निकल जाना ही बेहतर समझते हैं। पहले पहल अपना लेखन कार्य 'लोकहितकारी' नाम के संस्थान से शोध सहायक पद से शुरू करते हैं। इस पद पर रहने पर उन्हें प्रकाशन संस्थानों का काला सच पता चलता है। जहाँ पर धनपतियों के काले धन को सफेद धन किया जाता है। लेखक आनंदवर्धन के जीवन में कठिनाइयाँ या जोखिम होने के बावजूद भी डटकर सामना करने की शक्ति कूट-कूट कर भरी होती है। वह खुद के हक के लिए खड़े तो होते हैं, पर कुछे समय के पश्चात लेखक को प्रकाशन संस्थान से निकाला जाता है।

बाद में वह 'अरिहंतजी' के पास लेखन कार्य करते हैं। यहाँ पर लेखक के सामने नया सत्य बाहर निकल कर आता है, कि अरिहंतजी एक प्रसिद्ध लेखक होते हैं, लेकिन अरिहंतजी के प्रकाशनों को पिता के नाम पर प्रकाशित न करके उसका बेटा अपने शीर्षक देकर प्रकाशित करता था। यह बात आनंदवर्धन को अरिहंतजी के अपमान समान लगती है। तो वहाँ से आनंदवर्धन लेखन कार्य छोड़ देते हैं। वहाँ से लेखक कुछ संस्थानों में लेखन कार्य करते हैं। इस दौरान आनंदवर्धन की 'प्रतिबद्ध' प्रकाशन के साम्यवादी विचारधारा वाले मालिक से भेट होती है। यहाँ पर आनंदवर्धनजी देखते हैं, कि मालिक और नौकरों के बीच आपसी वैमनस्य ज्यादा बढ चुका होता है। महाविद्यालयों में चल रहे पाठ्यक्रम की किताबों में स्थान प्राप्ति हेतु चालाकी से फेरबदल के प्रयत्न यह सब लेखक देखते हैं।

यहाँ पर लेखक अपनी रचना शक्ति का बचाव नहीं कर पाते हैं, परिस्थिति अत्यंत गंभीर हो जाने पर लेखक के सब पुस्तकों को मालिक के द्वारा जला दिया जाता है और लेखक को वहाँ से निकाल दिया जाता है। बाद में लेखक पत्रकारिता जगत में पैर रखते हैं। यहाँ पर कथावस्तु पूर्ण होती है, पर पाठकों की सोच में कुछ सवालियों को लेकर हलचल चलती ही रहती है।

'गैल और गन' उपन्यास का मुख्य पात्र आज्ञाप्रसाद, जो अयोध्याप्रसाद का एकमात्र पुत्र है। जो पूर्णतः आवेदनकर्ता की भूमिका में चित्रित किया गया है। इस उपन्यास में ग्राम्य क्षेत्र के व्यक्तियों के बीच वैचारिक टकराव, विरोध और संघर्ष आदि को दिखाया गया है। सभी चरित्र गाँव से संबंधित हैं, इस बात को केंद्र में रखकर लेखक ने ग्राम्य जीवन को सूक्ष्म रूप से चित्रित किया है। यह उपन्यास भले ही पत्रात्मक शैली में लिखा गया हो, लेकिन इसमें सभी घटनाओं को दिखाया गया है। जिसमें कुछ नयापन देखने नहीं मिलता है, क्योंकि यहाँ छोटे-बड़े संघर्ष और लड़ाई-झगड़े अक्सर चलते रहते हैं।

दलित वर्ग के लोगों को अभी भी कुछ ग्राम्य विस्तार में बुरा बर्ताव आज भी सहना पड़ रहा है। इस उपन्यास में एक मार्ग (गैल) को लेकर विवाद है। ग्राम्य विस्तार में कुछ लोग अपने लाभ के लिए अपने कायदे कानून

बनाते हैं। उन्हीं के लिए कहीं पर से रास्ते बन जाते हैं और उसका उपयोग होता है।

आवेदनकर्ता आज्ञाप्रसाद और उसके भाई के बीच में टकराव के चलते उससे गैल की हिस्सेदारी छीन लेता है। उसको लेकर नायक न्याय के लिए अधिकारी तथा मिनिस्टर को आवेदन देता है, लेकिन तब्दील होते ही कार्य अटका-सा पड़ा रह जाता है। बाद में गाँव के व्यक्तियों से शत्रुता अधिक हो जाने पर उसे अपने पास 'गन' रखनी पड़ती है। आज्ञा को अपने गाँव में रहने का सौभाग्य बचपन से ही कम मिला था। शहर में पढ़ाई के बाद सतर्कता विभाग में कर्मचारी का पद प्राप्त होता है। वह सर्वोच्च अधिकारी का ड्राइवर है। "बड़े अफसर की दिली तमन्ना थी कि उनके पास सरकारी ड्राइवर भी उनकी अपनी बिरादरी का हो।" (२)

आज्ञाप्रसाद को अफसरों के घर के अलावा तीर्थस्थानों पर साथ में जाना होता था। आज्ञा कुलीन खानदान से था। अफसर भी आज्ञा का कहना मानते थे, इसलिए वह भाई को रोजगार दिलाने में सफल होता है। आज्ञाप्रसाद कठिन परिस्थितियों से लड़ने वाला, निरंतर मेहनती तथा संघर्ष करने वाला व्यक्तित्व है। उसके भाई ने आने-जाने का रास्ता बंद कर दिया, तब वह हार मानकर न बैठा रहा।

सरकारी गैल को पुनः शुरू करने के लिए संघर्षरत रहकर थाने तथा प्रशासनिक विभागों में आवेदन दिया। मुश्किलियों को सहने पर भी सफलता कम मिली। आज्ञा के विरोधियों ने इस अवसर का लाभ प्राप्त कर, अंत में उसे भारी हानि पहुंचाई गई। वह इच्छा रखता है, कि सब शांतिपूर्वक पूर्ण हो जाए। उसके पास गन होते हुए भी वह हिंसा नहीं चाहता था। वीरेन्द्र जैन के इस उपन्यास के पात्रों में विविधता के साथ-साथ सजीवता देखने मिलती है।

सन्दर्भ सूची -

- १: सबसे बड़ा सिपहिया, वीरेन्द्र जैन. पृ. ९.
- २: गैल और गन, वीरेन्द्र जैन. पृ. २५.